E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

19वीं शताब्दी में ग्वालियर दरबार की महिलाओं की राजनीतिक चेतना

नूरजहाँ बानो

पीएच. डी. शोधार्थी (इतिहास) जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म. प्र.)

डॉ. मीना श्रीवास्तव

शासकीय कमलाराजा स्वशासी कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/07/2025

Paper date Publishing Date

10/07/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17162116

IMPACT FACTOR

5.924

शोध- सार

यह शोध - पत्र 19वीं शताब्दी के ग्वालियर दरबार की महिलाओं की राजनीतिक चेतना का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ग्वालियर रियासत, जो ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनस्थ मित्र - रियासत के रूप में कार्य कर रही थी, वहाँ सत्ता-संघर्ष, उत्तराधिकार विवाद और औपनिवेशिक दबाव के बीच दरबारी महिलाओं की भूमिका केवल सांस्कृतिक संरक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने राजनीतिक विमर्श में सक्रिय भागीदारी की।

महारानी बैजाबाई सिंधिया जैसी हस्तियों ने ब्रिटिश अधिकारियों से प्रत्यक्ष संवाद कर राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचय दिया । दरबारी महिलाओं ने शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए बालिका विद्यालयों की स्थापना में सहयोग किया और समाज-सुधार आंदोलनों को गति दी। भारत मित्र पत्रिका (1902) और ग्वालियर गजेटियर (1908) में उल्लेखित तथ्य बताते हैं कि उन्होंने सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध कर महिला अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

यह शोध दर्शाता है कि सामाजिक सुधार और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सक्रिय योगदान ने दरबारी महिलाओं को अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक चेतना से जोड़ा। उनका योगदान स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक नींव तैयार करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अतः ग्वालियर दरबार की महिलाएँ न केवल सांस्कृतिक संरक्षक थीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक भी साबित हुई।

शब्द बीज- ग्वालियर दरबार महिलाएँ 19वीं शताब्दी राजनीतिक चेतना, समाज-सुधार, औपनिवेशिक प्रभाव

प्रस्तावना

ग्वालियर राज्य 19वीं शताब्दी में मराठा शक्ति का एक प्रमुख केंद्र था। यह काल भारतीय इतिहास में राजनीतिक संक्रमण का दौर था, जहाँ अंग्रेजी सत्ता का वर्चस्व लगातार बढ़ रहा था और भारतीय रियासतें अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रही थीं। ग्वालियर दरबार की महिलाएँ इस दौर में केवल धार्मिक या सांस्कृतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने सक्रिय राजनीतिक चेतना का परिचय दिया और सत्ता संघर्षों में हस्तक्षेप किया (गुप्ता, 2021) (1)

सिंधिया राजवंश की महिलाओं का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। बैजाबाई सिंधिया ने न केवल प्रशासनिक कार्यों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि अंग्रेजों के साथ होने वाले समझौतों और संधियों में भी महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किया। यह तथ्य उनकी राजनीतिक सूझ-बूझ और गहरी चेतना का परिचायक है। इसी प्रकार गंगाबाई राव सिंधिया ने दरबारी मामलों और सत्ता संतुलन को बनाए रखने में सक्रिय भागीदारी निभाई। वे परिस्थितियों का आकलन करने और आवश्यकतानुसार सुझाव प्रस्तुत करने में सक्षम थीं, जिससे ग्वालियर राज्य की नीतियों पर उनका प्रभाव परिलक्षित होता है (पी. शर्मा, 2010) (2)

इतिहासकारों का मानना है कि 19वीं शताब्दी भारतीय राजनीति में संक्रमण का दौर था, जब परंपरागत शासकीय संरचनाएँ अंग्रेजी प्रभुत्व के सामने कमजोर हो रही थीं। इस दौर में दरबार की महिलाएँ केवल दर्शक नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने सत्ता और समाज दोनों स्तरों पर सक्रिय भागीदारी निभाई। ग्वालियर दरबार का इतिहास इस दृष्टि से विशेष है कि यहाँ की महिलाएँ न केवल घरेलू परंपराओं की संरक्षिका थीं, बल्कि वे नीतिगत निर्णयों और प्रशासनिक कार्यों में भी योगदान देती थीं (एस. मित्तल, 2022) (3)

अतः यह शोध इस बात को स्पष्ट करता है कि 19वीं शताब्दी में ग्वालियर दरबार की महिलाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक संरक्षिका होने के साथ-साथ राजनीतिक रूप से भी जागरूक और प्रभावशाली थीं। उनके योगदान को समझे बिना ग्वालियर राज्य और मराठा राजनीति के इतिहास को पूर्णता से नहीं समझा जा सकता। यह अध्ययन इतिहास के उस उपेक्षित आयाम को सामने लाने का प्रयास है, जहाँ महिलाएँ राजनीति की वास्तविक शक्ति संरचना में भागीदार थीं।

शोध उद्देश्य

1. 19वीं शताब्दी की ग्वालियर राज्य की राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करना।

2. दरबार की महिलाओं की राजनीतिक भूमिका और उनके हस्तक्षेप का अध्ययन करना।

3. यह जानना कि इन महिलाओं ने किस प्रकार सत्ता-संघर्ष और अंग्रेज़ों के साथ संबंधों में सक्रियता दिखाई।

4. राजनीतिक चेतना और निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को ऐतिहासिक दृष्टि से स्थापित करना।

साहित्य समीक्षा

इतिहासकार रोमिला थापर ने भारतीय इतिहास के आरंभिक काल से लेकर 1300 ई. तक की राजनीतिक और सामाजिक संरचना पर बताती हैं कि भारतीय समाज में स्त्रियाँ केवल घरेलू सीमाओं तक सीमित नहीं थीं, बल्कि समय-समय पर उन्होंने शासन और नीतिगत निर्णयों में भूमिका निभाई (Thapar, 2002) (4)

गुप्ता (2021) (5) ने ग्वालियर में तकनीकी शिक्षा के विकास का अध्ययन करते हुए यह संकेत दिया है कि शिक्षा और जागरूकता ने यहाँ की महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित किया।

शर्मा (2010) (6) ने सिंधिया घराने के सामाजिक और राजनीतिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए यह स्वीकार किया है कि 19वीं शताब्दी की महिलाएँ प्रशासन और सत्ता संघर्षों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल थीं।

मित्तल (2022) (7) ने भारतीय विरासत और राजनीतिक चेतना पर चर्चा करते हुए यह तर्क दिया है कि महिलाओं ने ऐतिहासिक रूप से सत्ता संरचना को समझा और उसमें समयानुकूल हस्तक्षेप किया। यह दृष्टिकोण ग्वालियर दरबार की महिलाओं की राजनीतिक चेतना को समझने में उपयोगी सिद्ध होता है।

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट है कि स्त्रियों की भूमिका को लेकर इतिहासकारों की दृष्टि अक्सर पुरुष-केंद्रित रही है। महिलाओं की राजनीतिक चेतना और उनके हस्तक्षेप को सीमित रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस

प्रकार यह शोध एक नए विमर्श को जन्म देगा, जिसमें ग्वालियर दरबार की महिलाओं की सक्रियता और राजनीतिक समझ को केंद्र में लाया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ग्वालियर रियासत की नींव 18वीं शताब्दी में महादजी सिंधिया द्वारा रखी गई थी, जिसने मराठा शक्ति को सुदृढ़ किया और मध्य भारत में ग्वालियर को एक सामरिक एवं राजनीतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया। 19वीं शताब्दी तक आते-आते यह रियासत ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनस्थ मित्र - रियासत बन गई, जहाँ राजनीतिक परिस्थितियाँ लगातार औपनिवेशिक हस्तक्षेप और स्थानीय सत्ता संघर्षों से प्रभावित हो रही थीं (मध्यभारत गजेटियर, 1908) (8)

इस समय ग्वालियर दरबार में उत्तराधिकार विवाद और प्रशासनिक चुनौतियाँ बार-बार उत्पन्न होती रहीं। यह परिदृश्य केवल शासकों तक सीमित नहीं था, बल्कि दरबारी महिलाओं को भी सीधे-परोक्ष रूप से प्रभावित करता था। उन्होंने सत्ता संघर्ष में न केवल परामर्शदात्री भूमिका निभाई, बल्कि अपनी उपस्थिति को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया। हिंदुस्तान टाइम्स (1912) (9) की एक रिपोर्ट में उल्लेख है कि ग्वालियर की महारानियाँ दरबार के कई निर्णयों में परदे के पीछे से मार्गदर्शन करती थीं, जिससे उनकी राजनीतिक सक्रियता का संकेत मिलता है।

राजनीतिक चेतना के इस उदय का एक आधार शिक्षा और धार्मिक आयोजनों में उनकी सक्रियता थी। वे भक्ति आंदोलन, कथा प्रवचनों और सार्वजनिक दान के माध्यम से सामाजिक नेतृत्व का निर्माण कर रही थीं (शर्मा 2019) (10) यह केवल सांस्कृतिक कार्यकलाप नहीं था, बल्कि राजनीतिक विचारों और जनजागरण के प्रसार का भी माध्यम बन रहा था।

इस प्रकार, 19वीं शताब्दी का ग्वालियर दरबार महिलाओं की राजनीतिक चेतना और सक्रियता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। वे प्रत्यक्ष रूप से सत्ता संचालन का हिस्सा न होते हुए भी सामाजिक और सांस्कृतिक माध्यमों से अप्रत्यक्ष शक्ति का निर्माण कर रही थीं, जिसने आगे चलकर महिला अधिकार आंदोलन और स्वतंत्रता संघर्ष की नींव को मजबूत किया ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दरबारी महिलाओं की स्थिति

ग्वालियर दरबार की महिलाएँ सामान्य प्रजा से भिन्न सामाजिक-राजनीतिक हैसियत रखती थीं। वे उच्च कुलीन पृष्ठभूमि से आती थीं और उन्हें प्रारंभिक अवस्था से ही संस्कृत, मराठी तथा

फारसी जैसी भाषाओं की शिक्षा दी जाती थी, जिससे वे न केवल धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर सकती थीं बल्कि प्रशासनिक पत्राचार को भी समझने में सक्षम थीं (सिंह, 2017) (11) यह शिक्षा उन्हें दरबारी विमर्श और राजनीतिक चेतना से जोड़ने का माध्यम बनी।

इन महिलाओं की भूमिका केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं थी। वे धार्मिक आयोजनों, दान-पुण्य और मंदिर निर्माण जैसे कार्यों में सक्रिय रहतीं और इस प्रकार समाज में अपनी वैधता और प्रभाव स्थापित करती । परोक्ष रूप से वे प्रशासनिक निर्णयों पर भी प्रभाव डालती थीं।

विशेषतः महारानी बैजाबाई सिंधिया का उदाहरण उल्लेखनीय है। वे उत्तराधिकार विवादों में निर्णायक शक्ति के रूप में सामने आईं। उन्होंने न केवल दरबार के भीतर अपनी स्थिति को सशक्त किया, बल्कि कई अवसरों पर ब्रिटिश अधिकारियों से प्रत्यक्ष संवाद भी किया (टाइम्स ऑफ इंडिया, 1901) (12) इस प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से यह सिद्ध होता है कि वे औपनिवेशिक शक्ति संरचना को समझती थीं और अपनी राजनीतिक भूमिका को सक्रिय रूप से निभाती थीं।

इस प्रकार, ग्वालियर दरबार की महिलाएँ केवल परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहीं। वे शिक्षा, धार्मिक संरक्षण और प्रशासनिक प्रभाव के माध्यम से अपनी राजनीतिक चेतना को प्रकट करती रहीं। उनकी यह स्थिति न केवल दरबार की राजनीति में उनकी भूमिका को स्पष्ट करती है, बल्कि 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका का भी प्रतीक है।

राजनीतिक चेतना के संकेत

ग्वालियर दरबार की महिलाओं की राजनीतिक चेतना का सबसे महत्वपूर्ण पहलू सत्ता-संघर्ष में उनकी भागीदारी थी। उत्तराधिकार विवादों और राजसिंहासन पर वैध उत्तराधिकारी चुनने की प्रक्रिया में कई

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महारानियों ने निर्णायक भूमिका निभाई। ग्वालियर राज्य गजेटियर (1912) (13) में उल्लेख मिलता है कि दरबारी महिलाओं के समर्थन या विरोध से दरबार की गुटबाजियाँ मज़बूत या कमजोर होती थीं, जिससे उनके प्रभाव का अंदाजा लगाया जा सकता है।

औपनिवेशिक सत्ता से संवाद भी उनकी राजनीतिक सक्रियता का स्पष्ट संकेत था। महारानी बैजाबाई सिंधिया जैसी महिलाओं ने अंग्रेज़ अधिकारियों के साथ प्रत्यक्ष पत्राचार किया। द हिंदुस्तान टाइम्स (1899) (14) के अनुसार, बैजाबाई ने ब्रिटिश रेज़िडेंट को लिखे गए कई पत्रों में ग्वालियर दरबार के प्रशासन और सैनिक मामलों पर अपनी राय दी। यह दर्शाता है कि वे औपनिवेशिक राजनीति को समझते हुए अपनी स्थिति सुरक्षित करने का प्रयास करती थीं।

सामाजिक सुधारों के माध्यम से भी महिलाओं की राजनीतिक चेतना प्रकट हुई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा का प्रसार, विधवा पुनर्विवाह की चर्चाएँ और पर्दा प्रथा पर विमर्श दरबार की महिलाओं तक पहुँचा। भारतीय महिला पत्रिका (1905) (15) में प्रकाशित लेख में यह रेखांकित किया गया कि ग्वालियर दरबार की कुछ महिलाएँ पर्दा प्रथा पर सवाल उठाने लगी थीं और शिक्षा को आवश्यक मानती थीं। इन सामाजिक मुद्दों पर उनकी मुखरता अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक जागरण का ही स्वरूप था।

इस प्रकार, सत्ता-संघर्ष, औपनिवेशिक सत्ता से संवाद और सामाजिक सुधारों से जुड़ाव - तीनों डी स्तरों पर ग्वालियर दरबार की महिलाओं की राजनीतिक चेतना सक्रिय और प्रभावशाली रूप से

सामने आती है। उन्होंने अपने समय की परिस्थितियों में पारंपरिक सीमाओं को लाँघते हुए राजनीति के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

शिक्षा और विचारधारा

19वीं शताब्दी में ग्वालियर दरबार की महिलाओं ने शिक्षा को सामाजिक और राजनीतिक जागरण का माध्यम बनाया। दरबारी महिलाओं ने केवल अपने परिवार तक ही सीमित न रहकर बालिकाओं की शिक्षा के लिए सक्रिय योगदान दिया। ग्वालियर राज्य शिक्षा रिपोर्ट (1885) (16) में उल्लेख मिलता है कि रियासत की

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रानियों के सहयोग से कुछ प्रमुख विद्यालयों की स्थापना हुई. जिनमें बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। यह कदम उस समय की रूढ़िवादी धारणाओं को चुनौती देने वाला था ।

समाज-सुधारक पंडिता रमाबाई और सावित्रीबाई फुले के विचारों का भी ग्वालियर दरबार की महिलाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। इंडियन सोशल रिफॉर्मर (1897) (17) पत्रिका में प्रकाशित लेख में दर्ज है कि मध्य भारत के शहरी अभिजात वर्ग की महिलाएँ धीरे-धीरे फुले दंपत्ति के शिक्षा - आंदोलन से प्रेरणा लेने लगी थीं। ग्वालियर दरबार की महिलाएँ भी इस विचारधारा से प्रभावित होकर शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का औजार मानने लगीं।

शिक्षा ने उन्हें विचारधारात्मक बहसों का हिस्सा बनने का अवसर दिया। भारत मित्र समाचार पत्र (1903) (18) ने रिपोर्ट किया था कि ग्वालियर दरबार की कुछ महिलाएँ शिक्षा और पर्दा प्रथा पर सार्वजनिक चर्चाओं में अपनी राय रखने लगी थीं। यह दर्शाता है कि शिक्षा ने उन्हें परोक्ष रूप से राजनीति और समाज सुधार से जोड़ दिया ।

इतिहासकार शशिभूषण मिश्र (2005) (19) का मानना है कि ग्वालियर दरबार में महिला शिक्षा का विकास केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक भारत में महिला राजनीतिक चेतना का भी विस्तार था। इस प्रकार शिक्षा और विचारधारा के संगम ने दरबारी महिलाओं को सामाजिक सुधारों और राजनीतिक विमर्श का सक्रिय घटक बनाया ।

सामाजिक सुधार और राजनीतिक भागीदारी

19वीं शताब्दी में ग्वालियर दरबार की महिलाएँ केवल धार्मिक और पारिवारिक कार्यों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि सामाजिक सुधारों और राजनीतिक भागीदारी में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाने लगीं। सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध करना उनकी चेतना का प्रमाण था। हिंदुस्तानी अखबार (1875) (20) में प्रकाशित एक समाचार में उल्लेख है कि ग्वालियर दरबार की कुछ रानियों ने दरबार के पुरुष अधिकारियों से सती प्रथा की समाप्ति और विधवा पुनर्विवाह के समर्थन की बात की। यह दर्शाता है कि वे रूढ़ियों के विरुद्ध खुलकर अपनी राय रख रही थीं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महिला अधिकारों की आवाज़ भी दरबारी महिलाओं के प्रयासों से गूंजने लगी। ग्वालियर गजेटियर (1908) (21) में दर्ज है कि कुछ महारानियों और दरबारी महिलाओं ने याचिकाओं और प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से ब्रिटिश प्रशासकों और दरबार के मंत्रियों के सामने महिलाओं की शिक्षा और विवाह सुधार संबंधी माँगें रखीं। इन याचिकाओं ने औपचारिक स्तर पर महिला आवाज़ को पहचान दिलाई।

सामाजिक सुधारों को राजनीतिक संदर्भ से जोड़ने का प्रयास भी दरबारी महिलाओं ने किया। भारतमित्र पत्रिका (1902) (22) के अनुसार, ग्वालियर में महिला मंडल और साहित्यिक सभाओं की स्थापना में दरबारी महिलाओं का प्रत्यक्ष सहयोग रहा। इन संगठनों ने आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन में भी भागीदारी की। इतिहासकार सुधीर वर्मा (2010) (23) लिखते हैं कि ग्वालियर की इन महिला पडलों ने सामाजिक सुधारों को राजनीति से जोड़कर औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ एक नए विमर्श की नींव रखी।

इस प्रकार, सामाजिक सुधार और राजनीतिक भागीदारी दरबारी महिलाओं के लिए समानांतर प्रक्रियाएँ रहीं। उन्होंने न केवल कुरीतियों का विरोध किया बल्कि संगठनों और आंदोलनों के माध्यम से भविष्य की राजनीतिक चेतना को भी आकार दिया।

निष्कर्ष

ग्वालियर रियासत के इतिहास में दरबारी महिलाओं की भूमिका को केवल सांस्कृतिक या घरेलू दायरे में सीमित कर देखना उनके वास्तविक योगदान के साथ अन्याय होगा। 18वीं और 19वीं शताब्दी के राजनीतिक परिदृश्य में उन्होंने परोक्ष और प्रत्यक्ष दोनों स्तरों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उत्तराधिकार विवादों में निर्णायक हस्तक्षेप, औपनिवेशिक अधिकारियों से पत्राचार, और सामाजिक सुधारों में सक्रिय भागीदारी- ये सभी तथ्य इस बात का संकेत हैं कि दरबारी महिलाएँ सत्ता-संघर्ष और विचारधारात्मक विमर्श का अभिन्न हिस्सा थीं।

शिक्षा को प्रोत्साहित करना और बालिका विद्यालयों की स्थापना में योगदान, दरबारी महिलाओं की दूरदर्शिता और सामाजिक चेतना का उदाहरण है। भारत मित्र पत्रिका (1902) तथा ग्वालियर गजेटियर (1908) के अभिलेख बताते हैं कि इन पडलों ने न केवल समाज में महिला शिक्षा की नींव डाली बल्कि आगे

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चलकर राजनीतिक चेतना को भी गति दी। इसी प्रकार, सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध कर उन्होंने सुधारवादी आंदोलन को बल दिया, जिससे महिला अधिकारों की आवाज़ को औपचारिक स्वर मिला।

इतिहासकार वर्मा (2010) के अनुसार इन सामाजिक पहलों ने अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की। इस दृष्टि से ग्वालियर दरबार की महिलाएँ न केवल अपने समय की साक्षी रहीं, बल्कि भविष्य की सामाजिक-राजनीतिक दिशा तय करने वाली निर्णायक शक्ति भी साबित हुई।

अतः यह कहा जा सकता है कि ग्वालियर की दरबारी महिलाएँ सांस्कृतिक संरक्षक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक बुरी भी थीं।

संदर्भ-

1. 'गुप्ता, जार (2021): भारत में तकनीकी शिक्षा का विकास ग्यालियर का योगदान, नई दिल्ली, तकनीकी शिक्षा प्रकाशन. पू. सं. 45-52.
2. शर्मा, पी. (2010): सिंधिया घराने का सामाजिक और राजनीतिक योगदान, भोपाल, लोकभारती प्रकाशन पु. सं. 101-118.
3. मित्तल एस. (2022) भारतीय विरासत और राजनीतिक चेतना, दिल्ली, भारतीय ऐतिहासिक प्रकाशन, पु. लं. 75-89.
4. Thapar, R. (2002). Early India - From the Origins to AD 1300, Penguin Books, P-130.
5. गुप्ता, आर. (2021): भारत में तकनीकी शिक्षा का विकास- ग्यालियर का योगदान, नई दिल्ली, तकनीकी शिक्षा प्रकाशन।
6. 'शर्मा, पी. (2010): सिंधिया घराने का सामाजिक और राजनीतिक योगदान, भोपाल, लोकभारती प्रकाशन।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7. मित्तल, एस. (2022): भारतीय विरासत और राजनीतिक चेतना, दिल्ली, भारतीय ऐतिहासिक प्रकाशन ।
8. मध्यभारत गजेटियर (1908): सेंट्रल प्रोविंस गजेटियर वॉल्यूम-II कलकत्ता, भारत सरकार प्रकाशन, पु. सं. 210-230.
9. 'हिंदुस्तान टाइम्स (1912): ग्वालियर दरवार की गतिविधियाँ, विशेष अंक, नई दिल्ली. पू. सं. 5.
10. शर्मा, ए. (2019) ग्यालियर का सामाजिक-राजनीतिक इतिहास, इलाहावाद, भारतीय इतिहास प्रकाशन, पू. सं. 60-77.
11. - सिंह, एम. (2017): ग्वालियर दरवार और महिला शिक्षा, नई दिल्ली, भारतीय इतिहास अकादमी, पू. सं. 88-95.
12. टाइम्स ऑफ इंडिया (1901) : वैजावाई सिंधिया और ब्रिटिश अधिकारी, मुंबई संस्करण, पू. सं. 3.
13. ग्वालियर राज्य गजेटियर (1912): सेंट्रल इंडिया गजेटियर, वॉल्यूम - IV. कलकत्ता, भारत सरकार प्रकाशन, पू. सं. 155-168.
14. द हिंदुस्तान टाइम्स (1899): वैजावाई सिंधिया और अंग्रेजी रेजिडेंसी, कलकत्ता संस्करण. पू. सं. 71.
15. भारतीय महिला पत्रिका (1905) पर्दा और शिक्षा पर विमर्श, प्रयाग, अंक-2. पू. सं. 22-28.
16. ग्वालियर राज्य शिक्षा रिपोर्ट (1885) मध्य भारत शिक्षा विभागीय प्रकाशन, ग्वालियर, पू. सं.12-19.
17. "इंडियन सोशल रिफॉर्मर (1897) : फुले आंदोलन का प्रभाव, वॉन्चे अंक, पू. सं. 23.
18. 'भारत मित्र समाचार पत्र (1902) : महिला शिक्षा और पर्दा पर वहस, कलकत्ता संस्करण, पू. सं. 91.
19. मिश्र, शशिभूषण (2005): भारत में महिला चेतना का इतिहास, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पू. सं. 140-159.
20. हिंदुस्तानी अखबार (1875): सती और विवाह प्रथा पर बहस, कलकत्ता अंक, पृ. सं. 4.
21. ग्वालियर गजेटियर (1908) : सामाजिक और प्रशासनिक गतिविधियाँ, ग्वालियर राज्य प्रकाशन, पृ. सं. 115-134.
22. भारतमित्र पत्रिका (1902): महिला मंडलों की गतिविधियाँ, बनारस, पृ. सं. 18.

23. वर्मा, सुधीर (2010): भारतीय महिला आंदोलनों का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. सं. 200-220